3

बच्चों के लिए कैसे चुनें किताब?

अक्षय कुमार दीक्षित*

बच्चों के साहित्य में भी उन सभी विशेषताओं का होना बहुत ज़रूरी है जिनकी किसी प्रकार के साहित्य में अपेक्षा रखी जाती है। अच्छे साहित्य में अनेक परतें और गहराई होती है। जितनी बार पढ़ो, एक नयापन नज़र आता है। बाल-साहित्य का मतलब बचकाना साहित्य नहीं है। बहुत छोटे बच्चों की पुस्तक में भी एक रोचक कथानक और "मूड" होना चाहिए। फूहड़ता या बे-सिर-पैर की बातें नहीं होनी चाहिए। बच्चों के लिए किताबें चुनने का आधार बच्चा हो? किताबें चुनते समय किन-किन बातों को दृष्टिगत रखा जाए, इन्हीं सब बिंदुओं पर आधारित है यह लेख- ***बच्चों के लिए कैसे चुनें किताब।***

कामना जी दो बच्चों की माँ हैं, साथ ही वे एक प्राइमरी स्कूल में पढ़ाती भी हैं। उनका मानना है कि बच्चों को भाषा और दुनिया की बेहतर समझ के लिए बहुत-सी अच्छी किताबें पढ़ने के लिए देनी चाहिए। जब भी पुस्तक मेला लगता है या किसी दुकान में कोई अच्छी किताब नज़र आती है, वे उसे खरीदकर घर और स्कूल में बच्चों को दे देती हैं, पर उन्हें यह देखकर बहुत निराशा होती है कि बच्चे उन किताबों को हाथ तक नहीं लगाते। आपके विचार से इस बात के क्या कारण हो सकते हैं?

शायद कामना जी वही गलती कर रहीं थीं जो हममें से ज़्यादातर ''बड़े'' कर बैठते हैं। वे बच्चों की पसंद की नहीं, बल्कि अपनी पसंद की किताबें चुन रही थीं। देखा जाए तो बच्चों को अपनी पसंद और ज़रूरत की किताबें कभी-कभार ही मिल पाती हैं। इसका कारण यह है कि उनके लिए किताबें लिखने और चुनने का काम आमतौर पर "बड़े" ही करते हैं, जिन्हें मालूम ही नहीं होता कि उनकी पसंद क्या है या बच्चों के लिए किताबें लिखते या चुनते समय किन बातों का ख्याल रखना चाहिए। किसी भी पुस्तकालय या पुस्तक मेले में चले जाइए, आप पाएँगे कि हजारों पुस्तकें उपलब्ध हैं जो दावा करती हैं कि वे बच्चों के लिए लिखी गई हैं। उनमें कुछ अच्छी होंगी पर ज़्यादातर बचकानी और बेकार ही होंगी। सच्चाई यह है कि बच्चों के

* *शिक्षा सलाहकार*, सी-633, जे.बी.टी.एस.गार्डन, छत्तरपुर एक्स, नयी दिल्ली-110074

लिए अच्छी किताबें चुनना कोई "बच्चों" का खेल नहीं है।

बच्चों के लिए कौन-सी पुस्तक "अच्छी" कही जा सकती है? इस प्रश्न का उत्तर बहुत ही सरल है-वह पुस्तक जिसे बच्चे पढ़ना चाहते हैं, लेकिन कई बार हम बच्चों को ज़बरदस्ती कोई पुस्तक पढ़ने पर मज़बूर करने लगते हैं, भले ही वह बच्चों को बिल्कुल नापसंद हो, क्योंकि हमें लगता है कि इससे उनकी ''जानकारी'' बढ़ेगी या उनमें ''अच्छी आदतों'' का विकास होगा। इस तरह की विचारधारा का बहुत विध्वंसात्मक असर होता है। सबसे पहले तो इससे बच्चों की पढ़ने की इच्छा समाप्त हो जाती है। दूसरे, पुस्तकों के प्रति उनमें अरुचि का भाव पैदा हो जाता है। तीसरे, हम उस अनुभव का आनंद लेने से वंचित हो जाते हैं जो साथ-साथ बैठ कर पुस्तक में से कहानी सुनने-सुनाने से मिलता है। क्या इसका मतलब यह है कि हम बच्चों को हर वह पुस्तक पढ़ने को दें जो वे पढ़ना चाहते हैं?

नहीं! जिस तरह हम बच्चों के भोजन को लेकर सतर्क रहते हैं, उसी तरह उनके मानसिक भोजन के प्रति भी जागरूकता ज़रूरी है, अन्यथा वे ऐसी पुस्तकें भी चुन सकते हैं जो उनके तो क्या, किसी के लिए अच्छी नहीं हैं। इसलिए बच्चों के लिए पुस्तकें चुनते समय हमें कुछ बातों को ध्यान में रखना होगा। आइए, देखते हैं कि बच्चों के लिए पुस्तकें चुनते समय किन बातों का विशेष ध्यान रखा जाए।

किताब की विषयवस्तु

मोटे तौर पर विषयवस्तु का अर्थ है कि वह पुस्तक किस बारे में हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई पुस्तक राजस्थान की लोक कथाओं के बारे में है तो उसकी विषयवस्तु ''राजस्थान की लोकथाएँ'' या सिर्फ ''लोककथाएँ'' मानी जा सकती हैं। किसी-किसी पुस्तक की विषयवस्तु दोस्ती, साहस, न्याय या समानता भी हो सकती है, जो उसमें दी गई कहानियों पर निर्भर करता है। ऐसी विषयवस्तु की पुस्तकें चुनें जो सीधे -सीधे बच्चों के अनुभवों से संबंधित हों, कई अनुभव ऐसे होते हैं, जिन्हें दुनिया का हर बच्चा उम्र के अलग-अलग मुकाम पर ज़रूर हासिल कर लेता है। उदाहरण के लिए, जन्म से 2 वर्ष की आयु में प्रत्येक बच्चा बुनियादी गतिविधियाँ करने लगता है और अवधारणाएँ प्राप्त करने के साथ-साथ बुनियादी गतिविधियाँ करने लगता है और अपने आसपास की चीज़ों को पहचानने लगता है। इसलिए बच्चों की वे पुस्तकें जो सीधे-सीधे इन अनुभवों से संबंधित हैं, उन्हें इस आयुवर्ग के लिए उचित माना जा सकता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि इस आयुवर्ग के लिए रंग, आकार, गिनती, अक्षर, आवाज़ें, आस-पास के पशु-पक्षी,घर के सदस्य, ताल, शोर, उछल-कूद आदि उपयुक्त विषय रहेंगे।

3 से 5 वर्ष के बच्चे अपने लिए ज्यादा कामकाज करने लगते हैं, आस-पास की दुनिया के काम करने के तरीकों को समझने लगते हैं, बुनियादी मूल्यों का निर्माण करने लगते हैं, अपनी संवदेनाओं पर नियंत्रण करना सीखने लगते हैं और अपने माता-पिता, भाई-बहनों और दोस्तों के साथ संबंधों को रूप देने लगते हैं इसलिए इस आयुवर्ग के लिए दोस्ती, रूठना-मनाना, नाराज़ होना, किसी

स्थान की यात्रा, घूमना-फिरना, खेल-खिलौने, बाग-पेड़-पौधे आदि उपयुक्त विषय कहे जा सकते हैं। 6 से 8 साल के बच्चों के लिए स्कूल, पालतू पशु-पक्षी, दोस्त, संबंधी, खेल, रोज़मर्रा का जीवन आदि उचित विषय रहेंगे। 8 वर्ष से ऊपर के लिए यही विषय थोड़ी जटिल परिस्थितियों में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। साथ ही सही-गलत का चुनाव, विशाल दुनिया में खुद के स्थान को पहचानना और किसी समस्या का उचित तरीके से समाधान जैसे विषय भी बच्चे अब सराह सकेंगे।

बच्चों के साहित्य में भी उन सभी विशेषताओं का होना बहुत ज़रूरी है जिनकी किसी प्रकार के साहित्य में अपेक्षा रखी जाती है। अच्छे साहित्य में अनेक परतें और गहराई होती है। जितनी बार पढ़ो, एक नयापन नज़र आता है। कुछ लोग मानते हैं कि यदि कहानी में मुख्य पात्र जानवर या बच्चे हैं और उनके नाम शेरसिंह, बिल्लू, छोटू, परी आदि हैं तो वह ''बाल-साहित्य '' है।

बाल-साहित्य का मतलब बचकाना साहित्य नहीं है। बहुत छोटे बच्चों की पुस्तक में भी एक रोचक कथानक और ''मूड'' होना चाहिए। फूहड़ता या बे-सिर-पैर की बातें नहीं होनी चाहिए।

जहाँ आयु के अनुसार चुने गए विषय उस आयु के हर बच्चे के लिए उपयुक्त हैं, वहीं कुछ विषय ऐसे भी हैं जो किसी खास बच्चे के लिए इसलिए उपयुक्त कहे जा सकते हैं, क्योंकि वे उसकी रुचि के विषय हैं। उदाहरण के लिए कोमल 7 वर्ष की बच्ची है, लेकिन उसे सौरमंडल, अंतरिक्ष और तारों के बारे में बहुत जिज्ञासा है। इस बारे में कोई भी पुस्तक उसे मिलती है तो जब तक वह उसे पूरा पढ़ नहीं लेती, चैन से नहीं बैठती। इस आयु के ज़्यादातर बच्चे उस तरह की पुस्तकों में रुचि नहीं दिखाते। इसलिए उनके लिए अंतरिक्ष विषय उपयुक्त नहीं कहा जा सकता, लेकिन कोमल के लिए यह बिल्कुल उपयुक्त है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि बच्चों के लिए पुस्तक चुनते समय हमें बच्चे की उम्र और उसकी विशेष रुचि को ध्यान में रखते हुए देखना चाहिए कि उसकी विषयवस्तु बच्चे के जीवन के अनुभवों से संबंधित है या नहीं। इस तरह की विषयवस्तु बच्चे को पुस्तक के प्रति आकर्षित करने में मदद करेगी, बल्कि कई बार तो केवल बच्चे को पुस्तक से जोड़ने में विषयवस्तु ही पर्याप्त होती है।

चित्र

संदीप जी के घर में अखबार के साथ-साथ सामयिक साप्ताहिक पत्रिका भी आती है। जानते हैं, घर में सबसे पहले वह पत्रिका कौन लेकर बैठता है? उनका 5 साल का बेटा अरुण! वह तो अभी स्कूल भी नहीं जाता, लेकिन कई बार वह पत्रिका में देखकर अपने पिताजी को बताता है कि उसमें क्या कुछ छपा है। वह कहता है, ''पिताजी, एक बस और ट्रेन की टक्कर हो गयी।'' या ''इस बार हम भी पहाड़ों में घूमने जाएँगे।''

आपके विचार से वह यह सब कैसे बता पाता है? ऐसी कौन-सी चीज़ है जो उसे एक पत्रिका तक खींच लाती है? आपने सही पहचाना, वह हैं उसके चित्र।

प्रत्येक बच्चे को चित्र अच्छे लगते हैं। चित्र ही वह तत्व है जो बच्चों की पुस्तकों को जादुई प्रभाव देता है और बच्चों के लिए पुस्तकों को आकर्षक बनाता है, विशेष रूप में छोटे बच्चों को। इसलिए बच्चों के लिए पुस्तकें चुनते समय उन पुस्तकों के चित्रों पर भी ध्यान देना ज़रूरी है।

देखा जाए तो इस बारे में कोई आम राय नहीं बनायी जा सकती कि बच्चे को कैसे चित्र पसंद आएँगे और कैसे नहीं? उदाहरण के लिए कुछ लोग कहते हैं कि बच्चों को लोक शैली के चित्र पसंद आते हैं, जबकि कुछ लोग मानते हैं कि लोक शैली के चित्र अमूर्त और बच्चों की रुचि से परे की चीज़ हैं। एक आम व्यक्ति के नज़रिए से देखें तो यह जानना बड़ा सरल है कि पुस्तक में दिए गए चित्र अच्छे हैं या नहीं। अगर पुस्तक के चित्र आपको अच्छे लग रहे हैं तो सामान्यत: बच्चों को भी अच्छे लगेंगे, लेकिन हमेशा ऐसा होना ज़रूरी नहीं है। उदाहरण के लिए, ज़्यादातर बच्चे अँधेरी, डरावनी और अमूर्त चित्रकारी पसंद नहीं करेंगे। भले ही आपको वे कितने ही अच्छे लग रहे हों। विषयवस्तु की ही तरह, चित्र भी यदि बच्चे के अनुभवों और रुचि के विषयों से जुड़े हैं तो वे बच्चों को आकर्षित ज़रूर करेंगे।

बच्चों की ज़्यादातर पुस्तकों में केवल कामचलाऊ चित्र दे दिए जाते हैं, यह सोचकर कि बच्चों को क्या पता चलेगा अच्छे और बुरे चित्र का या क्या फर्क पड़ता है चित्र से, कहानी तो अच्छी है, लेकिन जो बाल साहित्य के प्रति गंभीर प्रकाशक हैं, वे चित्रों की ओर भी उतना ही ध्यान देते हैं, जितना वे पुस्तक की विषयवस्तु पर देते हैं। इसलिए अगर आपने बच्चों के लिए उपयुक्त विषयवस्तु वाली पुस्तक खोज ली है तो सामान्यत: उसमें उपयुक्त चित्र भी मिल ही जाएँगे।

छोटे बच्चों की पुस्तकों में बहुत सारे चित्र होने चाहिए, जबकि बड़ों की पुस्तकों में थोड़े बहुत चित्रों से भी काम चलाया जा सकता है। छोटे बच्चों की पुस्तकों में ज़रूरी नहीं कि बहुत विस्तृत चित्र हों। चार साल से छोटे बच्चों की पुस्तकों में सरल रेखाचित्र भी उन्हें मज़ेदार लगते हैं। चटख रंग और मूर्त आकृतियाँ उन्हें आकर्षित करती हैं। ज़्यादा जटिल चित्र उनके मन में पुस्तक के प्रति अरुचि उत्पन्न कर देंगे। हाँ, चार साल से बड़ी उम्र के बच्चों को अधिक बारीक विवरण दर्शाने वाले चित्र लुभाते हैं। जिन चित्रों में बारीक विवरण होते हैं, उनमें हर बार नयी-नयी चीज़ें और क्रियाकलाप खोजना इस आयु के बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। ऐसे चित्रों वाली पुस्तक कभी पुरानी नहीं होती।

हालाँकि नौ साल से ऊपर की उम्र के बच्चों की पुस्तकों में चित्र शब्दों से कम महत्वपूर्ण हो जाते हैं, लेकिन अभी भी उनका महत्त्व बरकरार रहता है। इस आयु में सरल और कार्टून शैली के चित्र पुस्तक के प्रति उन्हें आकर्षित करते हैं और पुस्तक देखते ही उसके प्रति अपना दृष्टिकोण बनाने में मदद करते हैं।

पुस्तक में किसी किस्म के जातीय, भाषाई, उम्र या रूप-रंग संबंधी, धार्मिक सांस्कृतिक,

सामाजिक या लैंगिक पूर्वाग्रह नहीं होने चाहिए। पात्र आत्मविश्वासी और सफल हों, लेकिन सफलता के केवल परंपरागत पैमानों जैसे "राजकुमारी से शादी" या "अमीर बन जाना" का ही प्रदर्शन न करते हों। यदि कोई पात्र परंपरागत विश्वास या नियम को तोड़ता हुआ नज़र आता है तो कहानी में उसे उपहास का पात्र नहीं बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि किसी कहानी में कोई लड़का घर में खाना बनाता है और उसके दोस्त उसका मज़ाक उड़ाते हैं, तो ऐसी कहानी छोड़ देना ही उचित है।

आपने जो पुस्तक चुनी है, यदि उसमें चित्र दिए गए हैं तो उनकी उपयुक्तता पर भी नज़र डालें। केवल पुस्तक में सुंदर-सुंदर चित्र ही पर्याप्त नहीं हैं। चित्र और शब्द एक-दूसरे के पूरक होने चाहिए। चित्र कथानक और पुस्तक की भावना से संगत हों और उसमें कुछ नयी बात जोड़ते हों, न कि उससे ध्यान भटकाते हों। उनमें अपनी एक कलात्मक छाप हो और वे बच्चों की कल्पना को पोषित करें। चित्रों में किसी किस्म के पूर्वाग्रह नज़र नहीं आने चाहिए।

कहानी या कथावस्तु

रेनू जी एक प्राथमिक स्कूल में पढ़ाती हैं। एक बात उन्हें बाकी शिक्षकों से कुछ अलग करती है। वे अपनी कक्षा में हर रोज़ एक कहानी ज़रूर सुनाती हैं। उनका कहना है, ''जिस समय मैं बच्चों को कहानी सुना रही होती हूँ, वह समय मेरे और मेरे बच्चों के लिए दिन का सबसे दिलचस्प समय होता है। मुझे यह देखकर बड़ा अच्छा लगता है कि बच्चे कहानी में इतना खो गए हैं कि कुछ तो मुँह बंद करना भी भूल जाते हैं। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए वे कहती हैं, ''अच्छी कहानी बच्चों की भावनाओं को सही तरीकों से बाँध लेती है। बच्चे कहानी के पात्रों को पसंद करते हैं और उनमें अपनी झलक देखते हैं। वे कहानी में बतायी गई समस्या से तनाव महसूस करते हैं मानो वे स्वयं कहानी का हिस्सा हों। इसी प्रकार, जब समस्या को सुलझा लिया जाता है, वे भी राहत और संतुष्टि महसूस करते है। कहानी में यह सक्रिय भागीदारी ही बच्चे को कहानी की ओर खींचती है। जब आप अपनी कोई मनपसंद फिल्म देख रहे होते हैं, क्या आप भी ऐसा ही महसूस नहीं करते? जब हमारी भावनाएँ किसी कार्य या चीज़ से जुड़ जाएँ तो हम कभी नहीं ऊब सकते। याद रखें, अच्छी कहानी कभी उबाऊ नहीं हो सकती। इसका मतलब यदि कहानी उबाऊ है तो वह बच्चों के लिए अच्छी नहीं कही जा सकती।''

अब हम बात करते हैं पुस्तकों में कहानी की। हालाँकि सभी पुस्तकों में कहानी नहीं होती (जैसे कि गिनती या अक्षर सिखाने वाली सामान्य पुस्तकें) लेकिन बच्चों को पुस्तकों से स्थायी रूप से जोड़ने का काम कहानी की पुस्तकें ही करती हैं। इसलिए आप जो पुस्तक बच्चों के लिए चुन रहे हैं, उसमें अच्छी कहानी ज़रूर होनी चाहिए। यदि चित्र-पुस्तक, कविता-पुस्तक या कथेतर साहित्य (नॉन फिक्शन) में भी अच्छी कहानी के तत्व शामिल होते हैं तो बच्चे उस पुस्तक को भी कहानी

जितनी रुचि से ही पढ़ते हैं। तो अब सवाल ये उठता है कि अच्छी कहानी में कौन-कौन से तत्व होते हैं? एक अच्छी कहानी में उचित प्रारंभ, मध्य भाग और अंत होता है। प्रारंभिक भाग में कहानी के पात्रों का परिचय और उनका विकास किया जाता है। मध्य भाग में किसी तरह की समस्या प्रस्तुत की जाती है और अंतिम भाग में उसका समाधान प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रारूप में थोड़ा बहुत अंतर हो सकता है, विशेष रूप से बहुत छोटे बच्चों की पुस्तकों में, लेकिन ज़्यादातर कहानियों का ढाँचा ऐसा ही होता है। इसलिए बच्चों के लिए पुस्तक चुनते समय उसकी कहानी पढ़कर देखें, भले ही पूरा ना पढ़ सकें। ध्यान दें, क्या उसमें किसी तरह की कोई समस्या है, जिसका समाधान खोजा गया है? क्या उसे पढ़ने में रस आ रहा है? क्या उसकी कथावस्तु भली प्रकार से बुनी गई है?

साथ ही इस बात पर भी ध्यान दें कि किताब का विषय और सामग्री उस आयु वर्ग के हिसाब से हो जिसके लिए आप पुस्तक चुन रहे हैं। छोटे बच्चों के लिए रोज़मर्रा की समस्याएँ और घटनाएँ पुस्तक का विषय हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, स्कूल से घर लौटते समय रास्ते में मिलने वाले कुत्ते से डर लगना। इस वर्ग के बच्चों की कहानियों की एक विशेषता होती है-शब्दों, वाक्यों और घटनाओं की पुनरावृत्ति। बच्चों को मज़ेदार शब्द और वाक्य दोहराना अच्छा लगता है। आप किसी बच्चे को खेलते देखिए, आपको इस बात का सबूत मिल जाएगा। इसके अतिरिक्त पुनरावृत्ति से उन बच्चों को पढ़ने में प्रवीणता हासिल करने में मदद मिलती है जो अभी सीखने की प्रक्रिया में हैं।

इस स्तर की कहानियाँ बहुत अधिक लंबी या जटिल नहीं होनी चाहिए। उनमें बहुत ज़्यादा घटनाएँ या पात्र नहीं हों तो बेहतर है। इस स्तर की पुस्तकों में कहानी के प्रथम तत्व यानि ''प्रारंभ'' में जल्दी से पात्रों का परिचय देकर कहानी के अगले तत्व यानि ''समस्या'' पर ध्यान केंद्रित कर लिया जाता है। उदाहरण के लिए 'लेखक' की पुस्तक ''जिल्द'' को देखा जा सकता है। इस कहानी में एक बच्चा अपनी पुस्तक पर जिल्द चढ़ाने की कोशिश कर रहा है। वह अलग-अलग तरह के कागज़ों से कोशिश करता है और अंत में सफल हो जाता है।

पूरी प्रक्रिया में उसकी माँ पास बैठी-बैठी उसे मूक प्रोत्साहन देती रहती है। यहाँ बतायी गई अच्छी कहानी की सभी विशेषताएँ इस पुस्तक में देखी जा सकती हैं।

बड़े बच्चे अधिक जटिल और बड़े कथानक पढ़ना चाहेंगे। इस वर्ग के लिए कहानी के प्रारंभ में पात्रों का विस्तृत रूप से वर्णन किया जाता है। मध्य भाग में दी गई समस्या भी अधिक जटिल होती है और इसी प्रकार कहानी के अंत में समाधान भी अधिक गूढ़ होता है। इस वर्ग की पुस्तकों में ऐसे मज़बूत किरदार होने चाहिए जिनसे बच्चे जुड़ सकें, जिनमें अपनी और अपनों की जिंदगी की झलक पा सकें और जिनके प्रति संवेदना रख सकें। "संवेदना" ही वह तत्व है जो प्रत्येक स्तर की पुस्तकों में अवश्य होनी चाहिए।

अधिकतर प्रकाशक पुस्तक में यह नहीं बताते कि वह किस आयु वर्ग के लिए है। यह ज़रूरी भी नहीं है क्योंकि कोई भी पुस्तक किसी भी आयु वर्ग के पाठक को भा सकती है, लेकिन एक प्रारंभिक पाठक और ग्राहक को एक मापदंड की ज़रूरत होती ही है। ऐसे व्यक्तियों की सहायता कर सकती है नेशनल बुक ट्रस्ट की पुस्तकें जिन्हें आयु वर्गों के अनुसार विभाजित किया गया है।

भाषा

मनोज जी अपने 4 साल के बेटे को रोज़ रात को एक कहानी पढ़कर सुनाते हैं। उस समय उनका बेटा बड़े ध्यान से पुस्तक की ओर देख रहा होता है। मनोज जी एक बात से थोड़े परेशान से हैं। कई बार ना चाहते हुए भी उन्हें पुस्तक में छपी कहानी को पढ़ते-पढ़ते उसे अपने शब्दों में बदल कर सुनानी पड़ती है। इसका कारण यह है कि पुस्तक में छपी भाषा इतनी अजीब या मुश्किल होती है कि यदि उन्होंने उसे वैसे का वैसा पढ़कर सुना दिया तो बच्चे को कहानी समझ ही नहीं आएगी।

पुस्तक की भाषा उसके सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। पुस्तक की भाषा समृद्ध और स्तर के अनुरूप होनी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि यदि पुस्तक में ऐसे शब्द हैं जो बच्चे के लिए नए हैं, तो उनसे घबरा कर पुस्तक को छोड़ देना उचित नहीं है। बच्चे संदर्भ के अनुसार ऐसे शब्दों के मतलब स्वयं समझ लेंगे, लेकिन यदि पुस्तक में वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ हैं, अटपटे अनुवाद हैं और पूरी पुस्तक बच्चों के मानसिक स्तर के ऊपर के भारी-भरकम शब्दों से भरी पड़ी है, तो ऐसी पुस्तक को किसी विद्वान के शोध के लिए छोड़ देना ही उचित है।

अटपटे शब्दों की ध्वनि बच्चों को आकर्षित करती है। वे ऐसी कहानियाँ सुनना सुनाना पसंद करते हैं जिनके शब्दों को बोलने में मज़ा आए। इसलिए पुस्तक में यदि ''अगड़म-बगड़म'' जैसे निरर्थक, लेकिन ध्वन्यात्मक शब्द हैं तो चिंतित ना हों, वे कहानी के आनंद में वृद्धि ही करेंगे।

लेखक कई बार कहानी में दर्शाई गई संस्कृति और स्थान को वास्तविकता से चित्रित करने के लिए किसी खास स्थान या बोली का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे आँचलिक शब्द और वाक्य कहानी की खूबसूरती में इज़ाफा करते हैं।

किसी भी पुस्तक में ऐसे शब्द ज़रूर होंगे जो किसी-न-किसी के लिए नए होंगे। इनसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। जब नए शब्दों को किसी परिचित संदर्भ में इस्तेमाल होते हुए देखते हैं, तो इससे हमारी खुद की भाषा का भी विकास होता है। दरअसल हम भाषा ऐसे ही सीखते हैं।

नैतिक मूल्य

नीरज जी अपनी कक्षा में बच्चों को एक किताब से कहानी पढ़कर सुना रही हैं। कहानी है 'खरगोश और शेर' की। आमतौर से पहली कक्षा के बच्चों को ये कहानी बहुत अच्छी लगती है, लेकिन नीरज जी की कक्षा के बच्चों के चेहरों से उदासीनता टपक रही है। वे जानते हैं कि मैडम कहानी खत्म होते ही पूछेंगी,

"अच्छा बच्चों बताओ, इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है?"

सदियों से कहानियों को नैतिक शिक्षा का माध्यम समझा जाता रहा है और आज भी लोग इस मानसिकता से निकल नहीं सके हैं। आमतौर पर हर 'बड़ा' जब किसी बच्चे के लिए कोई कहानी की किताब चुनता है तो उसकी यह जानने की तीव्र इच्छा होती है कि उस पुस्तक की कहानियों से शिक्षा मिलती है या नहीं।

इस विषय में हमें इतना चिंतित होने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हर अच्छी पुस्तक में एक नहीं, अनेकों मूल्य गुँथे रहते हैं। बल्कि जब हम किसी मूल्य की ओर ज़बरदस्ती बच्चों का ध्यान आकर्षित करवाते हैं तो इससे यह खतरा हो जाता है कि बच्चा फिर बाकी मूल्यों की ओर ध्यान तक नहीं दे पाता। दूसरी ओर, यह भी ज़रूरी नहीं कि बड़े जिन मूल्यों की ओर बच्चों का ध्यान ज़बरदस्ती आकर्षित करवा रहे हैं, वे उस आयु के बच्चों की आवश्यकता हो ही।

हमारी बात का सीधा-सा मतलब यह है कि कहानी के संदेश को अलग से उभारने के बजाए उसमें निहित करके समग्र रूप में देखना चाहिए। बच्चों की बहुत-सी पुस्तकें दोस्ती, मिलकर काम करना, मुश्किलों को हल करना, सहिष्णुता जैसे मूल्यों को प्रस्तुत करती हैं। थोड़े बड़े बच्चों की पुस्तकें अधिक जटिल मूल्यों को संबोधित कर सकती हैं, उदाहरण के लिए, सही कार्य कैसे करें, या सही मार्ग कैसे चुनें?

यदि कहानी में सीख देने के लिए कृत्रिम परिस्थितियाँ गढ़ी गई हैं तो बच्चे इस बात को महसूस कर लेंगे कि असल जिंदगी में ऐसा नहीं हो सकता। इसलिए ''मेरी प्रिय नैतिक कहानियाँ'' या ''सर्वश्रेष्ठ शिक्षाप्रद कहानियाँ'' जैसी पुस्तकें बच्चों के लिए सबसे अधिक नीरस और उबाऊ साबित होती हैं, ना ही इन्हें पढ़कर बच्चों का नैतिक विकास होने की संभावना है। वास्तव में किसी कहानी में छुपी और गुँथी सीख देने का प्रयास किया जाए तो वे समझ जाते हैं कि ''बड़े'' कहानी के बहाने से उन्हें प्रशिक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। हमें बच्चों के मस्तिष्क का आदर करना चाहिए। उनका ये अधिकार है कि वे मुद्दों के बारे में अपनी स्वयं की राय बनाएँ। लेखक बिना उपदेश दिए या ब्रेनवॉश करने का प्रयास किए बिना केवल सकारात्मक परिस्थितियों का चित्रण करके भी सही और गलत की पहचान करवा सकते हैं। अब परीक्षा हमारी है कि हम बच्चों के लिए ऐसी बेहतरीन पुस्तकें खोज पाते हैं या नहीं जिनमें लेखक ने बिना उपदेश की मुद्रा में आए सही मार्ग दिखा दिया हो।

प्रामाणिकता

ज़ेबा के पिताजी उसके लिए कहानियों की एक किताब लाए हैं। उसे पढ़ते हुए ज़ेबा थोड़ी परेशान-सी हो गई... आखिरकार उससे रहा नहीं गया और वह अपने पिता के पास पहुँच गई। उसने किताब दिखाकर कहा ''अब्बू, ये कहानी बर्फ में रहने वाले दो भालुओं की है। मगर देखो तो, नारियल का पेड़ बना है। क्या नारियल के पेड़ बर्फीली जगहों में भी मिलते हैं?''

कभी न कभी हम सभी ने ऐसी विसंगतियों का सामना किया होगा। कई बार लेखक और चित्रकार अनजाने में या असावधानी से इस तरह

की 'दुर्घटनाएँ' कर बैठते हैं। कई बार तो इसका कारण यह होता है कि प्रकाशक पैसे बचाने के लिए इंटरनेट से काँट-छाँट करके चित्रों का जुगाड़ कर लेता है। कभी-कभी लेखक किसी विशेष संस्कृति या स्थान को आधार बनाकर कहानी लिखने का प्रयास करता तो है, लेकिन उसके पास उस संस्कृति या स्थान की सही जानकारी नहीं होती। पुस्तक में सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से विविधता एक बहुत बेहतरीन गुण है क्योंकि इससे पुस्तक की उपयोगिता और महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है, लेकिन इस विविधता में प्रामाणिकता होनी चाहिए। यदि कहानी में किसी आदिवासी समूह की संस्कृति दर्शायी गई है तो इसका लाभ तभी है, जब उसमें वास्तविकता की झलक हो। कहानी के पात्रों की वेशभूषा, खान-पान, भाषा और कार्यों में उस संस्कृति की झलक नज़र आनी चाहिए। कई बार देखने में आता है कि कहानी तो भारत के गाँव में रहने वाले किसी बच्चे की है, लेकिन उसके चित्र किसी शहर या विदेश में रहने वाले किसी बच्चे की झलक पेश करते हैं। ऐसे चित्र पुस्तक को हास्यास्पद बनाने से अधिक कोई योगदान नहीं देते।

प्रामाणिकता गैर-कथात्मक पुस्तकों का भी अनिवार्य गुण है। यदि आप सूचनापरक पुस्तक चुन रहे हैं तो ध्यान दें कि उसमें तथ्यात्मक त्रुटियाँ नहीं होनी चाहिए।

बाल साहित्य का आकलन करने के लिए चेकलिस्ट

कहानी

1. क्या कहानियाँ बच्चों के लिए रोचक हैं?
2. क्या उनमें विभिन्न समस्याएँ सामने रखी गई हैं?
3. समस्याएँ कैसे हल की गई हैं?

पात्र/चरित्र

1. क्या पात्र विभिन्न सांस्कृतिक समूहों का प्रतिनिधित्व करते हैं?
2. क्या ''अच्छे'' पात्र विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों से हैं?
3. क्या नेतृत्व की भूमिका पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं द्वारा भी निभायी गई है?

विषयवस्तु

1. क्या कहानी बच्चों को सोचने, सवाल करने और विचार करने के लिए बहुत-सी चीज़ें उपलब्ध कराती है?
2. क्या कहानी में सीधे-सीधे मूल्यों को थोपने के बजाए उन्हें खोजने और अपने मूल्य बनाने के मौके हैं?

पृष्ठभूमि

1. क्या कहानियों में विविध पृष्ठभूमि दिखायी गई है।
2. क्या शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि को वास्तविक रूप से दर्शाया गया है?

चित्र

1. क्या चित्र पर्याप्त संख्या में हैं?
2. क्या ये विभिन्न सांस्कृतिक समूहों का वास्तविक प्रदर्शन करते हैं?
3. क्या चित्र रोचक, आकर्षक और स्तरानुकूल हैं?
4. क्या चित्र सभी पूर्वाग्रहों से रहित हैं?

गुणवत्ता के कुछ और पैमाने

पुस्तक की छपाई की गुणवत्ता, रंग, अक्षरों का आकार, इस्तेमाल किया गया फॉण्ट, कागज़

और जिल्द की मजबूती आदि कुछ ऐसे पक्ष हैं जो किसी पुस्तक को बेहतर या बद्तर बना सकते हैं। पुस्तक का कागज़ ऐसा हो जो आसानी से फट ना जाए, वह इतना पतला ना हो कि पीछे छपी हुई सामग्री नज़र आए, छपाई साफ़ सुथरी हो और चित्रों या अक्षरों की स्याही फैली हुई ना हो, अक्षरों का आकार इतना बड़ा हो कि पढ़ते हुए पाठक की आँखों पर ज़ोर ना पड़े, पुस्तक का आकार इतना बड़ा हो कि पाठक को उसे पढ़ने, पकड़ने और संभालने में दिक्कत ना हो।

कैसे चुनें किताब?

अब तक हमने यह जाना कि बच्चों के लिए किताब चुनते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखा जाए, अब हम इस बात पर विचार करते हैं कि किताब चुनी कैसे जाए?

बच्चों के लिए पुस्तक चुनने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि बच्चे स्वयं पुस्तक का चुनाव करें, कुसुम जी ऐसा ही करती हैं। वे बच्चों को अपने साथ ले जाती हैं। सबसे पहले यह देखती हैं कि पुस्तक के चित्र बच्चों को आकर्षित कर रहे हैं या नहीं। अगर पुस्तक देखने में आकर्षक है तो वे यह देखती हैं कि पुस्तक का कथानक रोचक है या नहीं। वैसे कभी-कभी तो पुस्तक के चित्र ही इतने प्रभावशाली होते हैं कि वे केवल चित्रों के कारण ही पुस्तक चुन लेती हैं, लेकिन वे इस कार्य में बच्चों की राय को ज़्यादा अहमियत देती हैं। उनका कहना है, ''मैं बच्चों को उनकी पसंद की किताबें चुनने और उनकी नापसंद की किताबें छोड़ने की पूरी आज़ादी देती हूँ। मैं यह भी जानने की कोशिश करती हूँ कि उन्हें किसी पुस्तक में कौन-कौन सी बातें अच्छी लगीं।''

दूसरी ओर मिश्रा जी कुछ अलग तरीका अपनाते हैं। उनके पास इतना समय या जानकारी नहीं है जितना कुसुम जी के पास है इसलिए वे यह देखते हैं कि पुस्तक या पुस्तक के लेखक को क्या कोई पुरस्कार मिला है या वह पुरस्कार के लिए नामांकित की गई है। उन्होंने अपने अनुभव से यह निष्कर्ष निकाला है कि सामान्यत: प्रसिद्ध साहित्य संगठनों जैसे-बाल पुस्तक ट्रस्ट द्वारा पुरस्कृत पुस्तकें बाकियों से बेहतर होती हैं। वे समाचार पत्रों आदि में समीक्षा पढ़कर या किसी मित्र द्वारा किसी पुस्तक की प्रशंसा सुनकर भी पुस्तक को चुनने के लिए प्रेरित होते हैं।

हम लता जी के तरीकों से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे पुस्तकालय के बाल खंड में जाकर यह देखती हैं कि कौन-कौन-सी पुस्तकें सबसे अधिक बार ली गई हैं। अगर पुस्तकालय की कोई पुस्तक बहुत अधिक पढ़ी जा रही है तो इसका मतलब वह पुस्तक बच्चों के लिए अवश्य ही रोचक पुस्तक है।

अब ज़हीर जी का उदाहरण देखते हैं। ज़हीर जी 40 वर्ष के हैं, लेकिन आज भी अपने बचपन को भूले नहीं हैं। वे किसी पुस्तक को देखते ही समझ जाते हैं कि बच्चों को वह पसंद आएगी या नहीं। उनका मानना है कि अगर उन्हें किसी पुस्तक को पढ़ने में आनंद नहीं आ रहा है तो बच्चों को भी नहीं आएगा। अगर हम ज़हीर जी की तरह बच्चों की नब्ज़ पर बड़े होने के बाद भी पकड़ रखते

हैं तो इस तरीके को अपना सकते हैं, लेकिन इस तरीके में बहुत सावधानी की ज़रूरत है। क्योंकि ज़रूरी नहीं कि जो किताब आपको रोचक लग रही हो वह बच्चों को भी रोचक लगे। किसी भी तरह के साहित्य को पसंद या नापसंद करना ''व्यक्तिगत'' मामला है। बाल साहित्य भी इससे परे नहीं है। जो किताब एक व्यक्ति को अनमोल लगती है, किसी दूसरे को बिल्कुल बेकार लग सकती है। किसी एक पीढ़ी को जो किताब अद्वितीय लगती है,अगली पीढ़ी को नीरस लग सकती है। बच्चे दुनिया को अलग नज़रिए से महसूस करते हैं। इसके अतिरिक्त, अलग-अलग उम्र में उनकी ज़रूरतें और पसंद भी बदलती रहती है। पुरानी पुस्तकें हमेशा ''क्लासिक्स'' नहीं होतीं।

ज़रूरी नहीं कि जो किताबें आपने अपने बचपन में पढ़ी थीं, वे आज की पीढ़ी को भी उतनी ही अच्छी लगें। हाँ, परीकथाएँ, पौराणिक कथाएँ आदि इसका अपवाद कही जा सकती हैं। क्योंकि वे किसी समय या स्थान की सीमा में बँधी हुई नहीं हैं। ज़हीर जी कहते हैं, ''आपको अपने बचपन में जो किताबें शानदार लगीं थी, बच्चों को उनसे परिचित तो करवाइए, लेकिन इस बात का फैसला उन्हीं पर छोड़ दीजिए कि वे उन्हें पढ़ना चाहते हैं या नहीं।''

> नवीनता और ताज़गी बच्चों की पुस्तकों में अवश्य नज़र आनी चाहिए। यदि कहानी पारंपरिक भी है, तो भी उसकी प्रस्तुति में नयापन उसे आकर्षक बना देता है। यहाँ यह भी ध्यान देना ज़रूरी है कि नवीनता के नाम पर केवल दिखावा या आडंबर न हो। कई बार प्रकाशक केवल लीक से हटकर कुछ करने के लिए बिना किसी औचित्य के ऐसे चित्र छाप देते हैं जिनका बच्चों की रुचि और आयु से दूर-दूर तक का वास्ता नहीं होता। इस तरह के आडंबर से बचने की भी ज़रूरत है।

लता जी का कहना है, ''कुछ लोग बच्चों के लिए पुस्तकें चुनने का सबसे आसान रास्ता पकड़ लेते हैं। वे पारंपरिक कहानियों की पुस्तकें जैसे-पंचतंत्र, जातक कथाएँ, दादा-दादी की कहानियाँ जैसे नामों से मिलने वाली पुस्तकें आँख बंद करके चुन लेते हैं। इस बात में कोई शक नहीं कि पारंपरिक कहानियाँ हज़ारों सालों से बच्चों को लुभाती आ रही हैं, लेकिन आजकल इन कहानियों के ऐसे घटिया संस्करण भी बाज़ार में छाए हुए हैं कि उन्हें पढ़कर शायद बच्चों की पढ़ने की इच्छा भी समाप्त हो जाए। यदि आप बच्चों को पारंपरिक कहानियों की पुस्तक देना चाहते हैं तो कम-से-कम तीन या चार प्रकाशकों के संस्करण देखकर सबसे बेहतर का चुनाव करें।''

आखिरी बात

संभवत: बच्चों की हर किताब उत्कृष्टता के हर मानक को पूरा नहीं कर सकती। इसलिए कई मामलों में, एक विशेष पुस्तक का मूल्यांकन करते हुए आपको उन पहलुओं को नज़रअंदाज़ करना होगा जिनके बारे में आप आश्वस्त नहीं हैं। कई बार कोई पुस्तक आपको इतनी पसंद आ जाएगी कि उसकी एक-दो कमियों पर आप

ध्यान नहीं दे सकेंगे, लेकिन प्रयास करें कि आपके संग्रह में ऐसी पुस्तकें ही हों जो अच्छी पुस्तक होने की हर कसौटी पर खरी उतरे। यदि आप नियमित रूप से पुस्तकें खरीदते हैं तो इस बात को ध्यान में रखें कि आपके बच्चों के संग्रह में विविध पृष्ठभूमियों, संस्कृतियों, लोगों, विषयों, आयु वर्गों और लैंगिक समूहों से संबंधित पुस्तकें मौजूद हों। आपके संग्रह में सभी विधाओं को स्थान मिलना चाहिए जैसे–कहानी, कविता, परीकथाएँ, यात्रा वर्णन, लोक कथाएँ, विज्ञान कथाएँ, चित्र कथाएँ, कॉमिक्स, गैर कथात्मक साहित्य आदि। विविध दृश्यों, लुभावनी कहानियों और प्रभावशाली चरित्रों वाली कहानियाँ आपके बच्चों का केवल मनोरंजन ही नहीं करेंगी, बल्कि ज़िंदगी भर के लिए उन्हें एक नियमित पाठक बना देंगी।

❑❑❑